अध्याय 1

लोकतंत्र में समानता

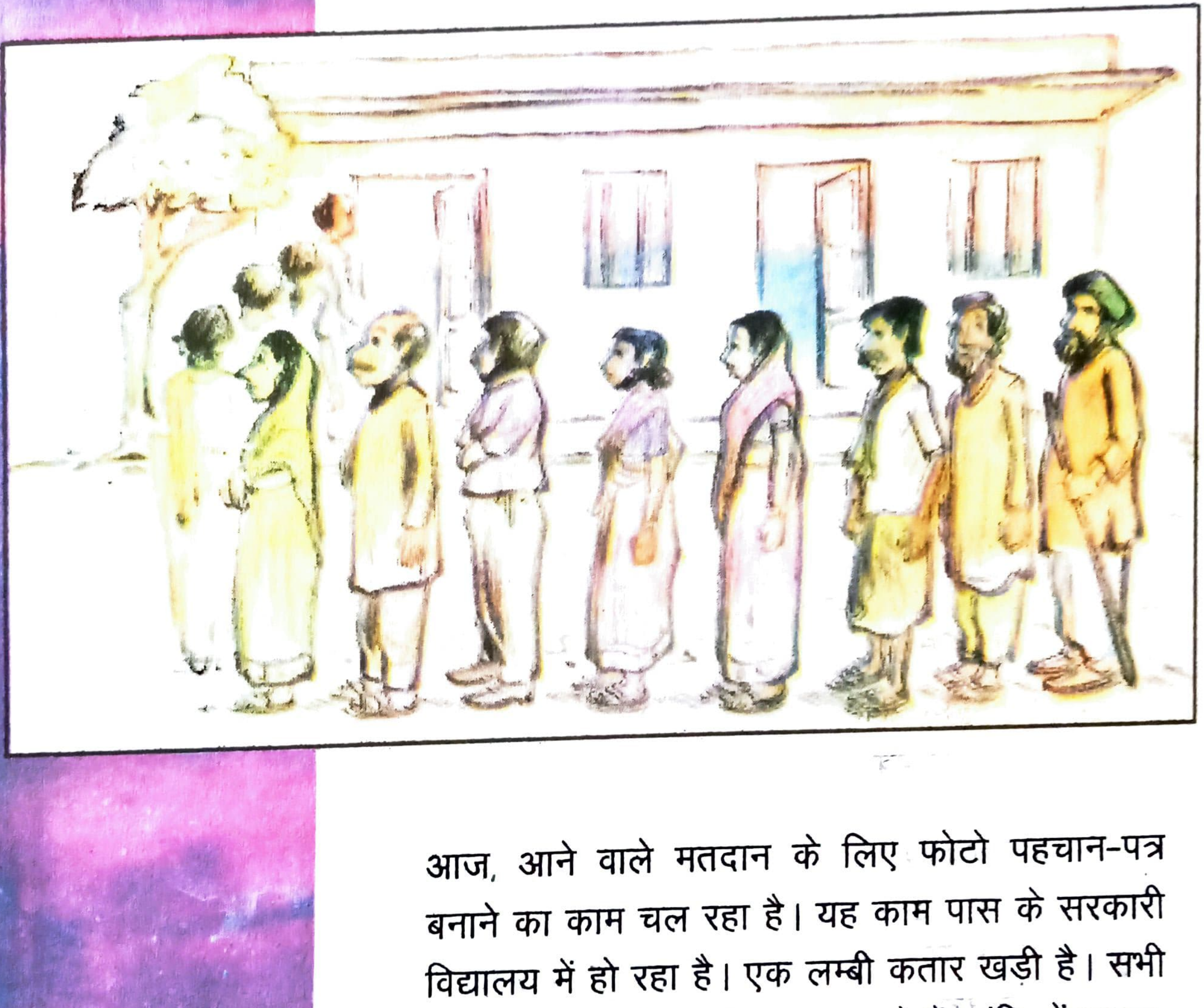

आज, आने वाले मतदान के लिए फोटो पहचान-पत्र बनाने का काम चल रहा है। यह काम पास के सरकारी विद्यालय में हो रहा है। एक लम्बी कतार खड़ी है। सभी व्यक्ति अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे हैं। पंक्ति में शान्ता, सलमा, गुरमीत, पूनम, राजेश, हमीद आदि सभी खड़े हैं। तभी ज्योति आती है। पूनम जो गुरमीत के पीछे खड़ी है; ज्योति के यहाँ चौका-बर्तन का काम करती है।

पूनम : दीदी यहाँ आइये मेरी जगह पर।

ज्योति : नहीं, मैं कतार में लगूँगी।

पूनम : दीदी, आज मुझे काम पर आने में देर होगी।

ज्योति : मुझसे पहले तू खड़ी है। तुम्हारा पहचान-पत्र पहले बन जाएगा। फिर देरी क्यों होगी?

पूनम : मुझे आपके पहले शेफाली दीदी के यहाँ जाना है। वहाँ का काम अभी बाकी है।

शांता : पहचान-पत्र बन जाने से क्या फायदा होगा? लाईन में खड़ा होना बेकार तो नहीं होगा?

पूनम : नहीं, पहचान-पत्र बन जाने के बाद ही हम अपना वोट डाल सकेंगे।

हमीद : राशन कार्ड बनवाने के लिए भी इसकी ज़रूरत पड़ती है।

1. वोट देने का अधिकार किसे है?
2. कतार में खड़े होकर क्या कहीं पूनम को समानता का अनुभव हो रहा है? कैसे?
3. वोट देने के अधिकार में क्या आपके काम, शिक्षा, पैसे या धर्म व जाति से कोई फर्क पड़ता है? चर्चा करें।
4. फोटो पहचान-पत्र की जरूरत और कहाँ-कहाँ हो सकती है?

?

एक दिन की बात है –

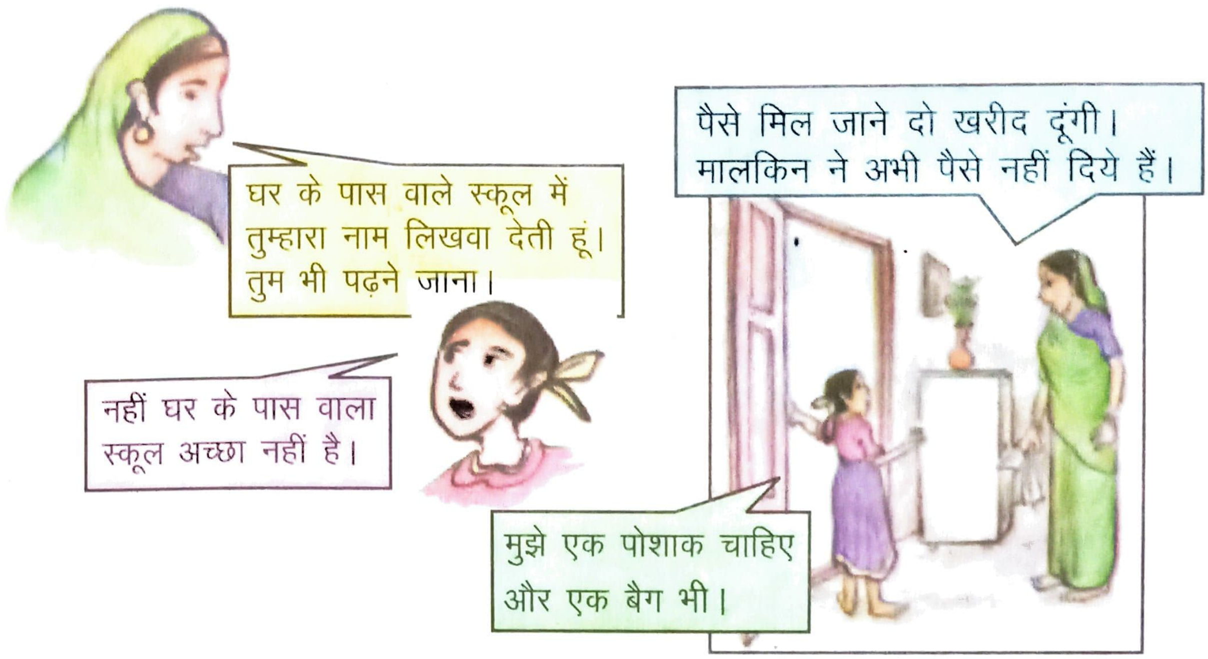

पूनम की बेटी रमा

पूनम ज्योति के यहाँ कभी-कभी अपनी पुत्री रमा को लेकर जाती है। रमा की आयु 7 वर्ष की है तथा ज्योति की बेटी शालिनी की आयु 5 वर्ष की है। शालिनी शहर के एक बड़े स्कूल में पढ़ती है। वह प्रतिदिन बस से स्कूल जाती है। कई बार रमा शालिनी के बस्ते को लेती है तथा शालिनी को बस पड़ाव तक पहुँचाती है।

कतार में खड़े होकर जहाँ पूनम को समानता का अहसास हो रहा था वहीं रोज़मर्रा के जीवन में कुछ अलग-सा महसूस होता है। सरकारी स्कूल बस्ती से दूर होने की वजह से रमा को एक छोटे प्राइवेट स्कूल में भेजना पूनम की मज़बूरी है। परंतु उसके पास बच्चे को प्राइवेट स्कूल भेजने के लिए पैसे नहीं हैं।

लोकतंत्र के लिए यह एक बड़ी समस्या है कि कुछ मायनों में जैसे वोट देने के अधिकार में तो समानता है परंतु रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में कई प्रकार की असमानताएँ हैं। देश का हर वयस्क, चाहे उसकी आर्थिक स्थिति कुछ भी हो; एक वोट का हकदार है। दूसरी तरफ लोगों की गरीबी और जीवन-यापन के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य का अभाव है। हम इन बातों को समझें और असमानताओं को दूर करने के लिए कि क्या किया जा सकता है, विचार करें।

1. अब तक रमा स्कूल क्यों नहीं गई?
2. पूनम को असमानता का अहसास क्यों होता है?
3. आपके आसपास किस-किस प्रकार के स्कूल हैं?
4. अच्छा स्कूल आप किसे मानेंगे? आपस में चर्चा करें।

?

बाल संसद और समानता

तुम सभी ने अपने विद्यालय बाल संसद के गठन में भाग लिया होगा। इसके लिए चुनाव के पहले कक्षाओं को पाँच समूहों में बाँटा जाता है। प्रत्येक समूह में सभी कक्षाओं के छात्र-छात्राएँ शामिल होते हैं। इसमें पाँच ऐसे समूह तैयार कर लिये जाते हैं जिसमें सभी कक्षाओं के छात्र-छात्राएँ एक साथ शामिल होते हैं। पाँचों समूह अपने-अपने समूह से दो प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं।

1. बाल संसद के लिए चुनाव करवाना क्यों जरूरी है?
2. यदि शिक्षक द्वारा प्रतिनिधि मनोनीत कर दिया जाता, तो क्या फर्क पड़ता?
3. क्या चुनाव प्रक्रिया में 'एक व्यक्ति एक मत' के सिद्धान्त का प्रयोग हुआ है? समझाएँ।
4. 'एक व्यक्ति एक मत' के नियम से क्या लाभ है?
5. आपके विद्यालय में बाल संसद ने क्या काम किया और क्या कर सकती है? अपनी राय लिखें।

मानवीय गरिमा और असमानता

जब लोगों के साथ असमानता का व्यवहार होता है तो उनके सम्मान को ठेस पहुँचती है। यही बात आप नीचे दिये गए उदाहरणों में देख सकेंगे।

गाँधी जी की अफ्रीका यात्रा :

अपने अफ्रीका प्रवास के दौरान एक बार गाँधी जी रेल गाड़ी द्वारा डरबन से प्रिटोरिया जा रहे थे। गांधी जी के पास प्रथम श्रेणी का टिकट था। वे प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे थे। दक्षिण अफ्रीका में उन दिनों रंग भेद चरम पर था। ट्रेन जब मारीटजवर्ग पहुँची तो रेल के डिब्बे में जिसमें गांधी जी यात्रा कर रहे थे, कुछ रेल कर्मचारी आये। गांधी जी को इन लोगों ने तृतीय

श्रेणी के डिब्बे में जाने को कहा। गांधी जी ने अपने पास प्रथम श्रेणी का टिकट उन्हें दिखाते हुए तृतीय श्रेणी के डिब्बे में जाने से इंकार कर दिया। एक अश्वेत का प्रथम श्रेणी में यात्रा करना रेल कर्मचारियों को नागवार लगा। उन्होंने पुलिस को बुलाकर गांधी जी के सामान को बाहर फेकवा दिया गया। यही नहीं गांधी जी को जबरदस्ती ट्रेन से उतार दिया गया।

अपने साथ हुए इस व्यवहार से गांधी जी को काफी ठेस पहुँची। इसके बाद उन्होंने रंग-भेद के विरुद्ध संघर्ष शुरू किया।

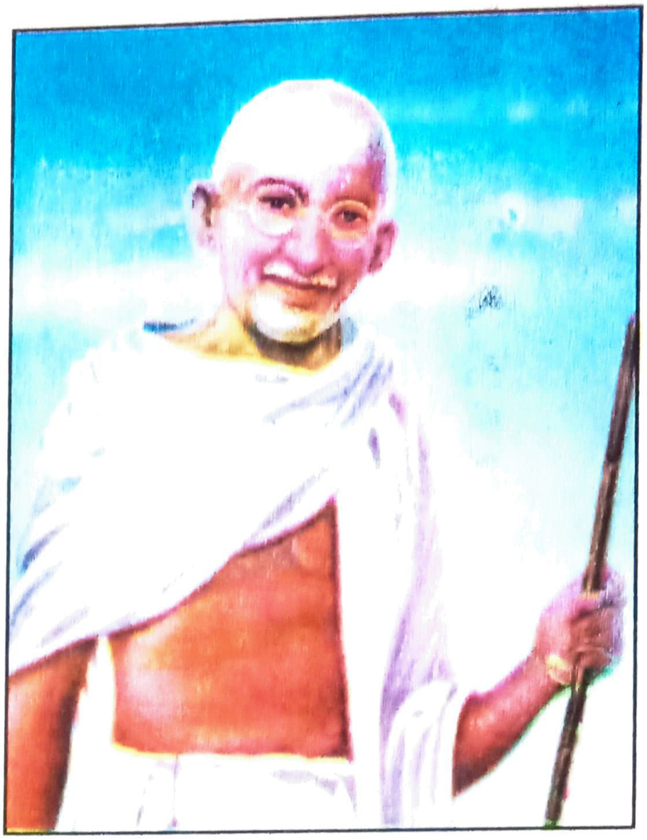

एक आपबीती :

मैं एक विवाह समारोह मे शामिल होने के लिए निकट के एक संबन्धी के यहां गया था। उनका परिवार आर्थिक रूप से काफी संपन्न था। समारोह में उपस्थित प्रायः सभी लोग समाज के धनी लोग थे। सभी लोग काफी मंहगे सूट-बूट में थे तथा गाड़ियों से आ रहे थे। मैं एक साधारण परिवार से हूँ। मुझे न तो बैठने के लिए और न ही खाने के लिए पूछा गया। यहां तक कि रात भर मुझे मच्छर काटते रहे और मैं सारी रात जागता रहा।

अपने संबंधी तथा अन्य लोगों के व्यवहार से मेरा मन काफी व्यथित हो गया।

1. दक्षिण अफ्रीका में रेल यात्रा के दौरान गाँधी जी के गरिमा को किस प्रकार ठेस पहुँची?
2. आपबीती के लेखक को अपने संबंधी के यहां किन बातों से ठेस पहुँची होगी? चर्चा करें।
3. क्या आप के साथ ऐसी कोई घटना हुई है जिसमें आप की गरिमा को ठेस पहुँची हो?

समानता एवं असमानता के व्यापक स्वरूप

असमानता केवल व्यक्तिगत भेदभाव की बात नहीं है। ऐसा नहीं है कि कुछ ही लोग इस तरह का व्यवहार करते हैं। कई बार रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस तरह के व्यवहार 'सामान्य' दिखते हैं परन्तु इसके पीछे एक गहरी असमानता का भाव छिपा रहता है। नीचे दिए गए उदाहरण हमारे समाज में लोगों की सोच को दर्शाते हैं और असमानता का व्यापक स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

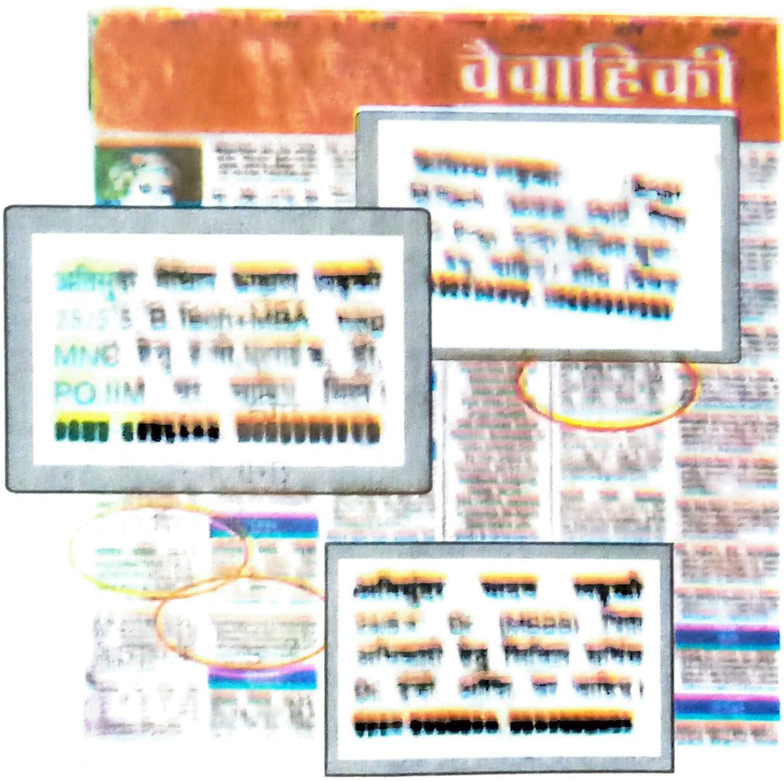

वैवाहिक विज्ञापन

हमारे समाज में जाति व्यवस्था की जड़ें बहुत गहरी हैं। इसका अच्छा उदाहरण दिए गए वैवाहिक विज्ञापनों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह शहरी क्षेत्र में रहने वाले उच्च शिक्षित लोगों द्वारा दिए गए विज्ञापन हैं। इन विज्ञापनों में प्रमुख रूप से जाति का उल्लेख होता है एवं विवाह की शर्तों में जाति की प्रमुखता होती है।

1. इन विज्ञापनों में जाति एवं अन्य सामाजिक असमानता के सूचक शब्दों को रेखांकित करें?

?

मध्याह्न भोजन और विद्यालय

देशभर में मध्याह्न भोजन प्रारम्भ करने के कई कारण हैं। कई बच्चे खाली पेट स्कूल आते हैं और उनका मन इस वजह से पढ़ाई में नहीं लगता। बहुत जगह बच्चे स्कूल की आधी छुट्टी में भोजन करने जाते हैं और बाद में वापस नहीं आते। कई माताओं को काम छोड़कर बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था हेतु वापस आना पड़ता है। ऐसा देखा गया है कि मध्याह्न भोजन के कारण कई विद्यालयों में न सिर्फ बच्चों की उपस्थिति बढ़ी बल्कि छीजन(पढ़ाई बीच में छोड़ देना) भी कम हुआ है।

मध्याह्न भोजन योजना में बच्चों को भोजन तो मिलता ही है, उनके बीच की सामाजिक दूरियों को भी कम करने का प्रयास इसके माध्यम से किया जाता है। सभी बच्चे एक ही प्रकार का भोजन करते हैं, चाहे उनकी जाति कोई भी क्यों न हो ।

इसी प्रकार भोजन बनाने के लिए किसी भी जाति के लोग नियुक्त किये जा सकते हैं चाहे वे दलित या महादलित से ही क्यों न हो? कहीं-कहीं भोजन बनाने वालों की जाति को लेकर विवाद भी हुआ पर इसे विद्यालय शिक्षा समिति ने अपने स्तर पर सुलझा लेने का प्रयास किया।

दलित एवं महादलित

दलित : दलित एक ऐसा शब्द है जिसे निचली कही जाने वाली जाति के लोग स्वयं को संबोधित करने के लिए प्रयोग में लाते हैं। जिसका अर्थ है– समाज में दबे एवं उपेक्षित लोग। इस शब्द का इस्तेमाल करने वाले दलित ये संकेत करते हैं कि उनके साथ आज भी भेदभाव किया जा रहा है।

महादलित : दलितों में सबसे पीछे रह गए समूह को बिहार में पहली दफा महादलित कहा गया।

1. मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य क्या है?
2. मध्याह्न भोजन और विद्यालय से संबंधित अंशों से समानता दर्शाने वाले वाक्य चुनो और लिखो?
3. क्या आपने कभी मध्याह्न भोजन के दौरान असमानता का अनुभव किया है? अगर हाँ तो कैसे?

?

1. बाल संसद समानता के लिए क्या कर सकती है? चर्चा कीजिये।

?

गरीबी एवं बेरोजगारी

असमानता का सबसे भयानक और बड़ा स्वरूप गरीबी और बेरोजगारी में नज़र आता है। आपने पूनम की कहानी तो पढ़ी। बिहार के आधे परिवार ऐसे हैं जिन्हें रोजाना भरपेट भोजन आज भी नहीं मिल पाता। सबसे ज़्यादा गरीब लोग खेतिहर मज़दूर हैं। इन्हें वर्षभर काम नहीं मिल पाता। ये भूमिहीन हैं या उनके पास बहुत थोड़ी जमीन है जिससे उनका गुज़ारा नहीं हो पाता। ये दोनों तरह से असमानता का सामना करते हैं क्योंकि अधिकांश खेतिहर मज़दूर दलित परिवार के हैं। एक तरफ बेरोज़गारी और दूसरी तरफ सामाजिक भेदभाव।

विश्व स्तर पर समानता के मुद्दे

महात्मा गाँधी के साथ दक्षिण अफ्रीका में अश्वेतों द्वारा किया गया दुर्व्यवहार एक विश्वव्यापी घटना बन गया।

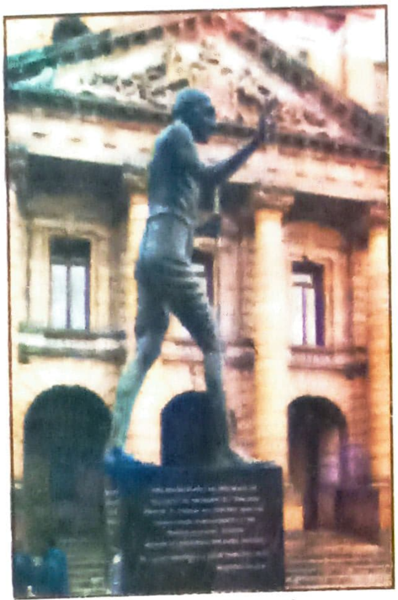

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी की प्रतिमा

रोजा पार्क्स

विश्व स्तर पर समानता के लिए संघर्ष का एक लम्बा इतिहास रहा है। कई उदाहरणों में एक अमेरिका में नागरिक अधिकार आन्दोलन (सिविल राइट्स मूवमेन्ट) के रूप में जाना जाता है।

इस आन्दोलन की जड़ में 1 दिसम्बर 1955 की वह घटना है जिसमें रोजा पार्क्स, जो एक अफ्रीकी अमेरिकन महिला थी, ने एक गोरे व्यक्ति को बस में अपनी सीट नहीं दी। क्योंकि वह दिन भर के काम के कारण थकी हुई थी, वह श्वेतों के लिए आरक्षित सीट पर बैठ गयी। गोरा व्यक्ति रोजा पार्क्स द्वारा सीट नहीं दिए जाने को अपना अपमान समझा, क्योंकि वहाँ यह नियम था कि अश्वेत अलग सीटों पर बैठेंगे। इस पर बस ड्राइवर बस को थाने ले गया। फिर भी महिला अपनी जगह डटी रही। अंततः उसे गिरफ्तार कर लिया गया। परिणामतः अफ्रीकी-अमेरिकनों के साथ असमानता के मुद्दे पर देशव्यापी आन्दोलन छिड़ गया। इसके बाद सन् 1964 के नागरिक अधिकार अधिनियम द्वारा अमेरिका में श्वेत-अश्वेत के आधार पर भेदभाव पर रोक लगा दी गयी।

शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका प्रभाव हुआ। अश्वेत बच्चों के लिए अलग खोले गए विद्यालयों में ही उनका नामांकन होता था, बन्द कर दिया गया। वे अब कहीं भी नामांकन कराने के लिए स्वतंत्र थे। किन्तु, वे आज भी अपनी असमर्थता तथा आर्थिक असमानता के कारण उन्हीं विद्यालयों में नामांकन को विवश हैं जहाँ पहले उनका नामांकन होता था। यही कारण है कि आज भी वहाँ श्वेत और अश्वेत के बीच असमानताएँ नज़र आती हैं।

चुनौतियाँ लोकतंत्र की

जहाँ लोकतंत्र होगा वहाँ समानता अनिवार्य रूप से होगी। अतः लोकतंत्र से उम्मीद की जाती है कि सबको समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए एवं सबके साथ बराबरी का व्यवहार होना चाहिए। किंतु, बहुत बार ऐसा नहीं होता और असमानता की स्थिति बनी रहती है। अपनी गरिमा बनाए रखने और साथ ही असमानता से जूझने के लिए लोग प्रयास करते हैं। वे अपनी बात सामने रखते हैं, प्रश्न पूछते हैं, गोष्ठियाँ करते हैं एवं जनआंदोलनों में भाग लेते हैं। इस पाठ्यपुस्तक के अलग-अलग अध्यायों में समानता की बात की जाएगी और इसके लिए किए गए संघर्षों के बारे में भी चर्चा की जायेगी।

अभ्यास

1. अपने आस पड़ोस से समानता और असमानता दर्शाने वाले किन्हीं तीन व्यवहारों का उल्लेख करें।

   समानता के व्यवहार

   1. ....
   2. ....
   3. ....

   असमानता के व्यवहार

   1. ....
   2. ....
   3. ....

2. क्या आपने कभी किसी के साथ असमान व्यवहार किया है? यदि हाँ तो कब और क्यों?
3. क्या आपको किसी के व्यवहार से ठेस पहुँची है?
4. यदि आप रोजा पार्क्स की जगह दक्षिण अफ्रीका में होते तो क्या करते?
5. क्या कभी आपने पंक्ति में खड़े लोगों से बाद में आने के बावजूद आगे होने का प्रयास किया है? यदि हाँ तो क्यों?
6. असमानता के कई रूप हैं। यह कैसे कह सकते हैं?